

पंचमेरु-पूजन

(पं. दानतरायजी कृत)

(गीता छन्द)

तीर्थकरों के न्हवन-जलतैं भये तीरथ शर्मदा,

तातैं प्रदच्छन देत सुर-गन पंचमेरुन की सदा ।

दो जलधि ढाई द्वीप में सब गनत-मूल विराजही,

पूजौं असी जिनधाम-प्रतिमा होहि सुख दुःख भाजही ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीति जिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र अवतर
अवतर संवौषट्, इति आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीति जिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ
ठःठः इति स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीति जिनचैत्यालयस्थजिनप्रतिमासमूह ! अत्र मम सन्निहितो
भव-भव वषट् इति सन्निधिकरणम् ।

(चौपाई आँचलीबद्ध)

सीतल-मिष्ट-सुवास मिलाय, जलसौं पूजौं श्री जिनराय ।

महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥

पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा को करो प्रणाम ।

महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥

ॐ ह्रीं श्री सुदर्शन-विजय-अचल-मन्दिर-विद्युन्मालीपंचमेरुसंबंधि-अशीति
जिनचैत्या-लयस्थजिनबिम्बेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल केशर करपूर मिलाय, गंधसौं पूजौं श्रीजिनराय ।

महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥ पाँचों. ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधिअशीति जिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो भवातापविनाशनाय
चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ।

अमल अखंड सुगंध सुहाय, अच्छतसौं पूजौं जिनराय ।

महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥ पाँचों. ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीति-जिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

बरन अनेक रहे महकाय, फूलसौं पूजौं श्री जिनराय ।

महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पाँचों. ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय
पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

मन-बांछित बहु तुरत बनाय, चरुसौं पूजौं श्री जिनराय ।

महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पाँचों. ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीति-जिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय
नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तम हर उज्ज्वल ज्योति जगाय, दीपसौं पूजौं श्री जिनराय ।

महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पाँचों. ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय
दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

खेऊँ अगर अमल अधिकाय, धूपसौं पूजौं श्री जिनराय ।

महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पाँचों. ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अष्टकर्मविनाशनाय
धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

सुरस सुवर्ण सुगन्ध सुभाय, फलसौं पूजौं श्री जिनराय ।

महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पाँचों. ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीति-जिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं
निर्वपामीति स्वाहा ।

आठ दरबमय अरघ बनाय, 'द्यानत' पूजौं श्री जिनराय ।

महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय ॥पाँचों. ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं
निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

प्रथम सुदर्शन-स्वामि, विजय अचल मन्दर कहा ।

विद्युन्माली नाम, पंचमेरु जग में प्रकट ॥

(बेसरी छन्द)

प्रथम सुदर्शन मेरु विराजै, भद्रशाल वन भू पर छाजै ।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी ॥
ऊपर पांच-शतक पर सोहै, नन्दन-वन देखत मन मोहै ।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी ॥
साढ़े बासठ सहस ऊँचाई, वन सुमनस शोभै अधिकाई ।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी ॥
ऊँचा जोजन सहस-छतीसं, पाण्डुक-वन-सोहै गिरि-सीसं ।
चैत्यालय चारों सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी ॥
चारों मेरु समान बखाने, भू पर भद्रशाल चहुँ जाने ।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी ॥
ऊँचे पाँच शतक पर भाखै, चारों नन्दनवन अभिलाखै ।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी ॥
साढ़े पचपन सहस उतंगा, वन सौमनस चार बहुरंगा ।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी ॥
उच्च अठाइस सहस बताये, पाण्डुक चारों वन शुभ गाये ।
चैत्यालय सोलह सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी ॥
सुर-नर-चारन वन्दन आवैं, सो शोभा हम किह मुख गावैं ।
चैत्यालय अस्सी सुखकारी, मन-वच-तन वन्दना हमारी ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरुसंबंधि-अशीतिजिनचैत्यालयस्थजिनबिम्बेभ्यो जयमालामहाध्वं
निर्वपामिति स्वाहा ।

(दोहा)

पंचमेरु की आरती, पढ़े सुनै जो कोय ।
'द्यानत' फल जानै प्रभो, तुरत महासुख होय ॥
(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)